नवपद ओली की आराधना

श्री नवपद ओली का तत्पर्य है कि तप के साथ नवकार मंत्र की आराधना, संक्षेप में पंचपरमेष्टी की आराधना, नवपद की आराधना सिद्धचक्र यंत्र के सम्मुख होती है। इसकी आराधना क्यों की जाती है? इसका विवरण पूर्व में वर्णन किया है, संक्षेप में राजा श्रीपाल व मयणा सुंदरी की कथा से सभी परिचित है। नव दिन तप 9 ओली की आराधना से श्री पाल राजा का कुष्ट रोग मिट गया था।

नवपद की ओली वर्ष में 2 बार अश्विन व चैत्र माह में आती है। इसकी आराधना के लिए कुछ क्रिया विधि निर्धरित की है, जिसका वर्णन नीचे दिया जा रहा है इसको समझने के लिए नवकार मंत्र को समझना होगा। नवकार मंत्र के 9 पद होते हैं जिसमें प्रथम दो पद देव के होते हैं और तीसरा, चौथा व पांचवा अर्थात् तीन पद गुरू के होते हैं और अंतिम चार पद धर्म के होते हैं।

तप दो काम करता है, एक तप आत्मा की शुद्धि करता है और दूसरा सभी सिद्धि प्राप्त होती है ज्ञान में नव तत्व के भावों को जानता है, दर्शन में श्रृद्धा, चारित्र में कर्मों का विरोध करता है और तप से आत्मा को शुद्ध करना। आत्मा के उपर लगे पाप (कषाय, अग्नि) को मिटाकर निर्मल बना देता है। अब प्रत्येक दिन की किस प्रकार आराधना की जाती है उसका संक्षेप में वर्णन निम्न प्रकार से है :

प्रथम दिन : अरिहंत के 12 पद गुण होते हैं।

जिस प्रकार तीर्थंकर ने कषाय रूपी कर्मों का नष्ट किए व उनके गुणों को स्मरण करते हुए हमारी आत्मा पर लगे पाप को दूर करने के लिए आराधना है।

इसके पूर्व हमें यह भी समझना होगा कि तीन प्रमुख वस्तुओं को समझना होगा :

1) मंत्र 2) यंत्र 3) तंत्र

मंत्र में नवकार महामंत्र (2) यंत्र में सिद्ध चक्र यंत्र (3) तंत्र तंत्र का तात्पर्य – क्रिया में सामायिक तंत्र महान है।

अरिहंत परमात्मा आठ गुण से है

1) 2) 3) 4) 5) 6) 7) 8)

इसकी आराधना यह मंत्र की क्रिया

ऊँ ह्व नमो अरिहंताणं

इस मंत्र में 20 माला गिनती है साथिया व 13 काउसग्गीय करने होते हैं।

दूसरे दिन सिद्ध–सिद्ध भगवान वे है जिन्होंने सभी प्रकार की सिद्धियां प्राप्त कर ली है और उच्च स्थान पर विराजरे के 8 गुण होते हैं।

सिद्ध भगवान के निम्न 8 गुण है उनको ध्यान में रखते हुए सभी प्रकार सिद्धी प्राप्त करने हेतु आराधना करनी है।

अरिहंताणं

अरि – दुश्मन – जिन्होंने राम द्रोपदि से सभी शत्रुओं को नष्ट किया है और तीर्थंकर नाम कर्म के कारण तीनों जगत उक्त क्रिया है और कर रहे है ओर करेंगे।

भाव से आहने को नमन करने पर बोधि लाभ करता है।

अरिहंत के गुण

मंत्र – ऊँ ह्री नमो सिद्धाणं

20 माता गिनना 8 काउसग्गीय 8 साथिया

इस प्रकार हम कल्पना को कि हमकों भी सिद्धिया प्राप्त हो और सिद्ध होने

3) तीसरे दिन आचार्य पद (गुरू)

आचार्य के बारे में वर्णन आता है कि जब भगवान महावीर का निर्वाण के पूर्व इन्द्र भगवान को पूछा कि आपके निर्वाण के पश्चात् कोई तीर्थंकर न होगें तीर्थंकर रूपी प्रकाश हो जाएगा और धीरे–धीरे सिद्ध भगवान व केवली भगवन्त भी समाप्त हो जायेंगे तो संसार का मार्ग कौन बताएगा। तब भगवान ने कहा सबके अभाव में आचर्य प्रकाश प्रदान करेंगे। आचार्य के 36 गुण होते है। जिसका वर्णन इस प्रकार है।

प्रथम दिन

1) श्री अशोक वृक्ष प्रतिहार्य विभूषिताय श्रीमद् अर्हते नमः
2) श्री पुष्पवृष्टि विभूषिताय श्रीमद् अर्हते नमः
3) श्री दिव्यध्वनि विभूषिताय श्रीमद् अर्हते नमः
4) चामरयुगल विभूषिताय श्रीमद् अर्हते नमः
5) स्वर्णसिंहासन विभूषिताय श्रीमद् अर्हते नमः
6) भामंण्डल विभूषिताय श्रीमद् अर्हते नमः
7) दुन्दुभि विभूषिताय श्रीमद् अर्हते नमः
8) छत्र त्रय विभूषिताय श्रीमद् अर्हते नमः
9) लोकालोक प्रकाशक केवल ज्ञान स्वरूप ज्ञानातिशय विभूषिताय श्रीमद् अर्हते नमः
10) सुरासुर गणनायक कृत समवसरण प्रतिहार्यादि विशिष्ट पूजातिशय विभूषिताय श्रीमद् अर्हते नमः
11) सर्व भाषानुगामी सकल संशयोच्छेदक पंच त्रिशद गुणलंकृन वचनातिशय विभूषिताय श्रीमद् अर्हते नमः
12) श्री स्वपरापायनिवारकापायापगमातिशय विभूषिताय श्रीमद् अर्हते नमः

दूसरे दिन मंत्र व क्रिया का जाप करना चाहिए

नमो सिद्धाणं : सिद्धों को नमन है जिनके सभी कर्म नष्ट हो चुके है और सभी प्रकार, हर प्रकार से .... है जिन्हें सभी प्रकार की सिद्धिया प्राप्त हो चुकीहै।

चौदह राज लोक के अग्रस्थान पर स्थित होकर जगत के सभी भावों को अपनी अपनी शक्तियों को जानते हे। लोकांग पर साक्षी भाव में रहते हुए जगत पर करूणा की वर्षा करते रहते हैं, सिद्ध भगवंतों को नमन करने से आत्मा में सकारातमक ऊर्जा का अविष्कार होता है।

दूसरे दिन : नमो सिद्धाणं : नवकार महामंत्र में नमो सिद्धाणं का महत्वपूर्ण है। यह पद देव का कहलाता है। ये देवता है जिन्होंने सभी प्रकार की सिद्धी को प्राप्त कर लिया है और सिद्धशीला पर विराजमान है। उनकी आराधना से जीवन के सभी सुख प्राप्त करते हुए चारित्र धर्म को स्वीकार सभी धर्म क्रिया व तप आराधना करते हुए सिद्ध हुए है। इनके आठ गुण होते हैं, इनकी आराधना के लिए है।

ऊँ ह्व नमो सिद्धाणं की 20 माला गिननी चाहिए व 8 का स्वास्तिक, 8 काऊसग्गीय आठा साथिया व 8 प्रदक्षिणा देने के पूर्व के पूर्ण ..... बोलकर इनके गुणों का आत्मसात करते हुए आराधना करनी चाहिए।

इस प्रकार हम कल्पना करें कि हमकों भी सिद्धियां प्राप्त हो ओर सिद्ध होने

3) तीसरे दिन आचार्य पद (गुरू) :

आचार्य के बारे में वर्णन आता है कि जब भगवान महावीर का निर्वाण के पूर्व इन्द्र ने भगवान को पूछा कि आपके निर्वाण के पश्चात् कोई तीर्थंकर न होंगे, तीर्थंकर रूपी प्रकाश हो जाएगा और धीरे–धीरे सिद्ध भगवान व केवली भगवन्त भी समाप्त हो जायेंगे तो संसार का मार्ग कौन बताएगा ? तब भगवान ने कहा है सबके अभाव में आचार्य प्रकाश प्रदान करेंगे। आचार्य के 36 गुण होते है। जिसका वर्णन इस प्रकार है :

दूसरे दिन – सिद्ध पद

रूपातीत स्वभाव में, केवल दंसण नाणी रे।

ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुणखाणी रे ।। वीर।।

1) ज्ञानावरणीय कम्र क्षयोद्गीूतानन्त ज्ञानगुण विभूषितेभ्यः श्री सिद्धेभ्यों नमः
2) दर्शनावरणीकर्म क्षयोद्गीुतानन्त दर्शनगुणविभूतिषेभ्यः श्री सिद्धेभ्यो नमः
3) वेदनायेकर्म क्षयोद्भूताव्याबायसुखगुण–विभूतिषेभ्यः श्री सिद्धेभ्यो नमः
4) मोहनीयकर्म क्षयोद्भूतानन्तसम्यक्त्वचारित्रगुण विभूतिषेभ्यः श्री सिद्धेभ्यो नमः
5) आयुष्यकर्म क्षयोद्भूताक्षयस्थितिगुणः विभूतिषेभ्यः श्री सिद्धेभ्यो नमः
6) नामकर्मक्षयोद्भूतारुपित्वादिगुण विभूतिषेभ्यः श्री सिद्धेभ्यो नमः
7) गोत्रकर्मक्षयोद्भूतागुरूलचुगुण–विभूतिषेभ्यः श्री सिद्धेभ्यो नमः
8) अन्तरायकर्मक्षयोद्भूतानन्ताकरण त्रीर्यगुगविभूतिषेभ्यः श्री सिद्धेभ्यो नमः

तीसरे दिन

सिद्ध भगवान के 8 गुण है उनका चिंतन करके, मनन करके तंत्र मंत्र का क्रिया के साथ–साथ करना चाहिए ।

नमो आयरियाणं

विश्व व देश में आठ प्रकार के धर्म प्रचलित है जैसे (1) जैन धर्म (2) वैदिक धर्म (3) सिख धर्म (4) ईसाई धर्म (5) बौद्ध धर्म (6) इस्लाम धर्म (7) पारसी धर्म आदि जैन धर्म सबसे प्राचीन है, वास्तविक, सच्चा धर्म है तथा वैज्ञानिक है। वैसे कोई भी धर्म छोटा या बड़ा नहीं होता, सबका लक्ष्य एक है केवल मार्ग भिन्न–भिन्न है।

यहां पर जैन धर्म जो सबसे प्राचीन होने से इसका वर्णन करते हुए आराधना करना है।

जैन धर्म में मुख्यतया: तीन बिन्दु प्रमुख है (1) मंत्र (2) यंत्र (3) तंत्र

मंत्र में सबसे बड़ा, महान व प्रभावी है नमोकार

2) सिद्धचक्र यंत्र : यह यंत्र सबसे प्राचीन है तथा प्रभावी है, इस यंत्र की उपासना, पूजा कर ही मायणा सुन्दरी ने श्रीपाल राजा को कुष्ठ रोग से मुक्त किया था, उसी समय से वर्तमान तक पूजा परम्परा आराधना प्रचलित है।

3) तंत्र–मंत्र का तात्पर्य है क्रिया : क्रिया कौनसी सामायिक तंत्र द्वारा धार्मिक क्रिया की जाती है। इसी श्रृंखला में नवपद ओली की आराधना में प्रयय दो पद (नवकार मंत्र में) की आराधना कीजो देव की आराधना से सम्बन्धित है। तीसरा पद गुरू का है, गुरू के तीन पद है उनमें से सबसे बड़ा पद आचार्य का है। जिसकी आराधना करनी है। आचार्य कौन होते हैं, किसके कहा जाता है, इसको समझने के लिए व्यवहारिक दृष्टि से किसी भी स्कूल हेडमास्टर को प्रधानाचार्य कहा जाता है लेकिन जैन धर्म के "रामसेरी" आगम में आचार्य को तीन भागों में विभाजित किया गया है।

(1) कलाचार्य (2) शिल्पाचार्य (3) धर्माचार्य

प्रथम दो प्रकार के आचार्य जीवन निर्वाह के लिए..... होते हैं। तीसरे प्रकार के आचार्य धर्म से सम्बन्धित होते है जो धर्म क्रिया करते हुए अपने लक्ष्य (मोक्ष) की ओर प्रशस्त करते है। आचार्य पद मोक्ष प्राप्त करने का प्रवेश द्वार है। आचार्य भगवान द्वारा बतलाए गए आचार्य का पालन करता है (आचाराग सूर्य के अनुसार) और अन्य साधु साध्वी, श्रावक–श्राविका से पालन कराते हैं। ये संघ के प्रशासक होते हैं, मार्ग दर्शन होते हैं, आचार्य का पद बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि ये वे गुरू है जो धर्म के मर्म को समझते हैं और ये समाज के नियन्त्रक है, संघ के रक्षक होते है। इनके 36 गुण होते है। इनके गुणों का उल्लेख सूत्र वर्णन है।

5 महाव्रतधारी होते हैं, 5 (पांचो) इन्द्रियों का नियन्त्रक है, पांच समितियों के पालक है। जिसमें से है ईर्या .....

तीन गुप्तियों – मन, वचन – काया द्वारा किसी प्रकार से .....

ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिए 9 बाढ़ होती है इसका पालन करते है।

इस प्रकार 36 गुण होते उसका पालन करते हैं। सभी आचार्य के कुछ मंत्र, लब्दि होती है लेकिन उसका उपयोग के लिए प्रतिबन्ध है। लोकल संघ की रक्षा करने के लिए उपयोग कर सकते हैं। ऐसे

उदाहरण भी आते है जैसे :

1) आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी के भाई श्री वराहमीर श्री स्वामी के ईर्ष्या करता था और उनको हमेशा परास्त करने का प्रयास करता रहा लेकिन सफलता नहीं मिली और अंत में वह मृत्यु की ओर चला गया। मृत्यु के बाद वह व्यतर देव बना वहां अपने भाई की प्रशंसा को नहीं देख सका और उसने प्रभाव से महामारी का प्रकोप किया तब संघ को काफी नुकसान होने लगा इस भद्रबाहुस्वामी ने उवसग्ग स्त्रोत की रचनाकर उस महामारी को समाप्त कर संघ की रक्षा की।

2) आचार्य री मानतुग सूरि पर एक विग्रह आया जिसमें संघ को बचाना आवश्यक हो गया तब उन्होंने श्री आदिनाथ भगवान को स्मरण करके भक्ताम्भर स्त्रोत की रचना कर संघ को सुरक्षित किया।

3) आचार्य श्री कालिक सूरि की बहिन सरस्वती जो साध्वीथी, उस पर वहां के राजा ..... . मोहित हो गया, उसको राजमहल में लाने का आदिश दिया, सिपाही उसको पकड़ कर ले गये, साध्वी ने अपनी रक्षा के लिए विलाप करती हुई संघ से भाई को पुकार रही थी लेकिन सफलता नहीं मिली और यह बात जब आचार्य कालिक को ज्ञात हुई तो वे स्वयं राजा के पास जाकर ललकारा कि वे साध्वी को छोड़ दे अन्यथा बहुत बुरा होगा। राजा वही माना हो उन्होंने साधु वेश को छोड़ क्षेत्रीय वेशभूषा धारण कर शस्त्र लेकर अन्य सामान साथियों के साथ राजा गंर्धविल पर आक्रमण किया और राजा परास्त कर बहन साध्वी को छुड़वाया और पुनः प्रायश्चित के साथ साधुवेश धारण किया।

3) भगवान महावीर के निर्वाण के बाद देश में भयंकर विषकाल पड़ा और संघ की रचनाकर संघ को उस पर सवार कर मायपुरी जहां पर रूका था ले गए और वहां पर राजा द्वारा परेशान करने लगा तो उसको दूर किया उस समय मायानगरी जो जगन्नाथपुरी है।

4) इसी प्रकार श्री मानदेवसूरि जी ने भी लघु शांति की रचना कर महामारी के प्रभाव को ..... किया।

5) श्री केसरिया जी तीर्थ के विवाद को सुलझाने की बात करने हेतु श्री शांतिसूरि मय संघ के बावनवाड़ से उदयपुर आ रहे थे, तब मेवाड़ राज्य ने मार्ग अवरूद्ध कर उनके आने पर प्रतिबंध लगा दिया, तब आचार्यश्री आकाश विद्या से उड़ने की कला से मदार ग्राम में श्री वृद्धिचन्द तलेसरा के घर की छत पर रूके। सभी उनको वहां देखकर आश्चर्यचकित हो गए। मेवाड़ के महाराणा को ज्ञात हुआ तो उन्होंने एक बैठक कर वार्ता की।

आचार्य तीर्थंकर तुल्य होते है। भगवान महावीर का जब निर्वाण को जाने वाले थे तब इन्द्रदेव ने भगवान से कहा कि हे प्रभु, आपके निर्वाण को सिधारने पर संघ का संचालन कौन करेगा ? और आपके ज्ञान का प्रकाश कौन पल्लिवत करेगा ? अवसर्पिणी काल में अब कोई तीर्थंकर नहीं होगा और अन्य पूर्व घर भी कुछ समय समाप्त हो जाएगा। तब भगवान ने कहा कि आचार्य शासन के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करेंगे। कहा जाता है कि सूर्य व चन्द्रमा अन्य सूर्य व चन्द्रमा नहीं दे सकता लेकिन एक आचार्य कार्य आचार्य को बना सकता है, वे जगह जगह जाकर ज्ञान रूपी प्रकाश की लौ जगाते रहेंगे।

स्थानाग सूत्र में स्वभाव के आधार पर चार तरह के आचार्य का उल्लेख है :

1) आंवला के फल की तरह उपर से गुणकारी और भीतरी से कसैले
2) द्राक्ष की तरह अर्थात् उपर से कठोर भीतर से खट्टे मीठे
3) खीर की तरह – खीर मीठी होती है, लेकिन अन्दर से चावल फीके होते हैं।
4) गन्ने की तरह – उपर से भीतर से मीठे–मीठे ही होते हैं।

इस प्रकार का स्वभाव शिष्यों को, संघ को, अनुसार अनुशासन में रखने के करना पड़ता है।

आचार्य की आठ सम्पदा होती है :

1) आचार्य सम्पदा : आगम में बताए हुए आचार्य के गुणों का पालन करना, करवाना

2) श्रुत सम्पदा : आचार्य अपने धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्मों के बारे में अध्ययन करते है और प्रश्न आने पर उस पर समझते है।

3) शरीर सम्पदा : आचार्य शरीर से दिखाई देने वाले होने चाहिए, केवल सुन्दता नहीं, उनका आभा मण्डल, चेहरे का तेजस्व व आभा मण्डल।

4) वाचना सम्पदा : अपने शिष्यों को पढ़ाने व सही तरह से समझाना होती है।

5) मति सम्पदा : बुद्धि भी तीक्षण होती है, जो एक बार पढ़ लिया जान लिया वह स्मृति में रह जाती है।

6) वचन सम्पदा : वचन सिद्ध होते है, जो शब्द उनके मुँह से निकल जाते हैं उसको सभी पालन करते हैं।

7) संग्रह सम्पदा : आचार्य को पास जैनाचार्य के जितने भी सामग्री होती है, उसको विधिपूर्वक संभालते है।

8) सम्यकता सम्पदा : संयमशील होते हैं, समता वाले हैं, करूणामय, मरणा से मधुर होते है, शब्दों को मौन समझकर कब व क्या बोलना है, उनका इस ज्ञानशील होते हैं।

इस प्रकार से आचार्य पद सर्वोत्तम पद है जो धर्म के कर्म को समझा जा सके और स्वयं आचार का पालन करते हुए संघ से पालन करने की क्षमता रखने वाले होते हैं, ऐसे आचार्य पद की आराधना स्तुति बोलते हुए, निम्न 36 गुणों को आत्मसात कर आराधना करनी चाहिए।

ऊँ ह्वी नमो आयरियाणं, 20 माला, 36 साथिया 36 प्रकक्षिणा, 36 काउसग्गीय

आचार्य के निम्न गुण है :

उवज्जाण उपाध्याय को नमन : जिन शासन के ब्रुत ज्ञान, द्वादशांगी के धारक उपाध्याय भगवत स्वयं वातरत् होते हैं और अनुयायियों को ज्ञान का उत्कृष्ट दान करते हैं। जगत में सभी प्रकार के दानों में ये दान सर्वोत्तम है क्योंकि पणम् नाण, ... दया सम्यांग आचरण के लिए ज्ञान प्रथम चाहिए। आध्यात्मिक क्रियाओं में समझ ही मूलाधार है, वस्तुतः ज्ञान ही जीव का उपादान निर्माण द्रव्य है। इसलिए ज्ञान की उपासना के लिए उपाध्याय पद उत्तम है।

साधु यदि नमन आत्मा आध्यात्मक प्रवेश करने के लिए प्रथम सोपान है।

इन पांचों परमोष्टि को नमन करने से सभी

तीसरा दिन

(आचार्य पद)

ध्याता आचारज भला महामंत्र शुभ ध्यानी रे।
पंच प्रस्थाने आतमा आचारज होय प्राणी रे।। वीर ।।

1) श्री प्रतिरुपगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
2) श्री तेजस्वितागुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
3) श्री युगप्रधानागमगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः।
4) श्री मधुरवाक्यगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः।
5) श्री गाम्भीर्यगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
6) श्री धैर्यसुबुद्धिगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
7) श्री उपदेशतत्परतागुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
8) श्री परिश्राविगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः।
9) श्री सौम्यप्रकृतिगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
10) श्री संग्रहशीलतागुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
11) श्री अभिग्रहगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
12) श्री अविकत्थकगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
13) श्री अचपलतागुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
14) श्री प्रशांतहृदयगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
15) श्री क्षमाधर्मगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
16) श्री मार्दवगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
17) श्री आर्जवगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
18) श्री मुक्तिधर्मगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
19) श्री तपोधर्मगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
20) श्री संयमधर्मगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
21) श्री सत्यधर्मगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
22) श्री शौचधर्मगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।

23) श्री अंकिचन्यधर्मगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
24) श्री ब्रह्मचर्यधर्मगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
25) श्री अअनित्यभावना भावितत्वगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
26) श्री अशरणभावना भावितत्वगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
27) श्री संसार भावना भावितत्वगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
28) श्री एकत्व भावना भावितत्वगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः ।
29) श्री अन्यत्व भावना भावितत्वगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः।
30) श्री आशुचित्य भावना भावितत्वगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः।
31) श्री आश्रव भावना भावितत्वगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः।
32) श्री संवर भावना भावितत्वगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः।
33) श्री निर्जराभावना भावितत्वगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः।
34) श्री लोकस्वभाव भावना भावितत्वगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः।
35) श्री बोधिदुर्लभत्व भावना भावितत्वगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः।
36) श्री धर्मकथकार्हन्त एव इति भावना भावितत्वगुण विभूषिताय श्री आचार्याय नमः।

चतुर्थ दिन

उपाध्याय का पद गुरू का पद कहलाता है। उपाध्याय को अन्य नामो से भी जाना जाता है जैसे ज्ञानी, पन्यास, प्रर्वतक। ये आचार्य पद से एक श्रृंखला कम होते हैं। आचार्य के बाद अपनी विद्वान, वरियता के बाद इनमें से किसी को आचार्य पद प्राप्त होता है। ये आचार्य संहिता के पालन करते है और करवाते हैं। ये आगम के ज्ञाता होते हैं, संयमशील होते हैं, साधक होते है, अनुशासन होते हैं, ये भी पांचों आचार (सं. ज्ञान, स. दर्शन, सं. चारित्र, तपोचार्य व वीर्य चार्य) के धारक होते हैं। इनके निम्न 25 गुण होते हैं, सर्वप्रथम स्तुति बोलकर, इनके गुणों को आत्मसात करते हुए निम्न प्रकार से आराधना करनी चाहिए।

ऊँ ह्वी नमो उवज्जायाणं

20 माला, 25 साथिया, 25 काऊसग्गीय, 25 प्रदक्षिणा दी जानी चाहि व माला मिननी चाहिए।

गुण निम्न प्रकार है :

उपाध्याय के गुण

चौथा दिन : उपाध्याय पद

1) श्री आचारांग सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
2) श्री सूत्रकृतांग सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

3) श्री स्थानांगसूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
4) श्री समवायांग सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
5) श्री भगवत्यंग सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
6) श्री ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
7) श्री उपासकदशांग सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
8) श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
9) श्री अनुत्तरौपपातिक दशांग सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
10) श्री प्रश्नव्याकरणांग सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
11) श्री विपाकांग सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
12) श्री उत्पाद पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
13) श्री अग्रायणीय पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
14) श्री वीर्य प्रवाद पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
15) श्री अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
16) श्री ज्ञान प्रवाद पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
17) श्री सत्य प्रवाद पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
18) श्री आत्म प्रवाद पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
19) श्री कर्म प्रवाद पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
20) श्री प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
21) श्री विद्याप्रवाद पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
22) श्री कल्याणप्रवाद पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
23) श्री प्राणावाय पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
24) श्री क्रियाविशाल पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः
25) श्री लोकबिंदुसार पूर्व सूत्र पठन पाठन तत्परतागुण विभूषितेभ्यः श्रीउपाध्यायेभ्यो नमः

पांचवें दिन

नमो लोए सव्ववासाहूणं

नवकार मंत्र के 9 पद में केन्द्र बिन्दु साधु का होता है। पहले चार पद में से 2 देव के और दो गुरू जो साधु पद से उच्च पद पर आसीन होते हैं,उपर चार पद धर्म के होते हैं जो धर्म की क्रिया से सम्बन्धित होते हैं, साधु–भगवंत एक त्याग की मूर्ति होती है, सर्वप्रथम वे सभी सांसारिक सुख को त्याग कर चारित्र धर्म अंगीकार करते हैं, यह कार्य इतना सरल नहीं होता है। चारित्र धर्म अंगीकार करने वाले व्यक्ति संयमी,

साधक, आज्ञाकारी, मिलनसार आदि गुणों से भरे हुए हैं।

चारित्र धर्म अंगीकार करने के बाद वह धर्म क्रिया की ओर जा सकता है, अर्थात् धर्म क्रिया (धर्म को समझने) का प्रवेश द्वार होता है, उसी प्रकार मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त करने का भी प्रवेश द्वार है। वह धर्म क्रिया करते हैं और अपने से छोटे साधु व श्रावकों से करवाते हैं और बाद में अपनी वरियता व योग्यता के पद पर आसीन होते हुए मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है।

साधु के निम्न 27 गुण होते हैं : प्रथम स्तुति बोलकर इन गुणों को अपने मन में आत्मसात कर निम्न मंत्र की आराधना करनी चाहिए।

पाँचवा दिन – साधु पद

अप्रमत्त जे नित रहे नवि हरखे नवि सोचे रे।
साधुसुधा ते आतमा शुं मूंडे शुं लोचे रे ।। वीर।।

1) सर्वतः प्राणातिपापत विरमणव्रत गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
2) सर्वतो मृषावाद विरमणव्रत गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
3) सर्वतो ऽ दत्तावन विरमणव्रत गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
4) सर्वतः परिग्रह विरमणव्रत गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
5) सर्वतः परिग्रह विरमणव्रत गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
6) सर्वतो रात्रि भोजन विरमणव्रत गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
7) सर्वतः पृथ्विकायरक्षण गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्योनमः
8) सर्वतो ऽ प्काय रक्षण गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्योनमः
9) सर्वतःतेजस्काय रक्षण गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्योनमः
10) सर्वतो वायुकाय रक्षण गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्योनमः
11) सर्वतो वनस्पतिकाय रक्षण गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्योनमः
12) सर्वतो द्वींद्रियादि त्रसकाय रक्षण गुण विभूषि श्री साधुभ्योनमः
13) सर्वतः स्पर्शनेंद्रिय विषय निग्रह गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
14) सर्वतो रसनेद्रिय विषय निग्रह गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
15) सर्वतो घ्राणेंद्रिय विषय निग्रह विभूतिषतेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
16) सर्वतश्चक्षुरिन्द्रिय विषय निग्रह गुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
17) सर्वतः श्रीत्रेन्द्रिय विषय निग्रह गुण विभूतिषतेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
18) सर्वतो लोभनिग्रह गुण विभूतिषतेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
19) सर्वतः क्षमागुण विभूतिषतेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः

20) सर्वतो भाव विशुद्धिगुण विभूतिषतेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
21) सर्वतः प्रतिलेखनादिक्रिया विशुद्धिगुण विभूतिषतेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
22) सर्वतः संयमयोग युक्तागुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
23) सर्वतोऽकुशल मनोयोग निरोधगुण विभेषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
24) सर्वतोऽकुशल वचनयोग निरोधगुण विभेषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
25) सर्वतोऽकुशल कामयोग निरोधगुण विभेषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
26) सर्वतः शीतादिपरिषहसहनशीलतागुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः
27) सर्वतो मारणान्तिकोपसगँ सहिष्णुतागुण विभूषितेभ्यः श्री साधुभ्यो नमः

ॐ ह्र नमो लोए सव्वसाहूणां के 27 गुण है

इस मंत्र की 20 माला 27 साथिया, 27 काउसग्गीय करना चाहिए। यदि कोई जीव अपने प्राण छोड़ने के पूर्व यदि वह किसी साधु के दर्शन कर लेता है या हो जाए तो वह निश्चित ही अपने कर्मों के अनुसार उच्च योनी में जन्म लेगा।

साधु – नमो लोए सव्वसाहूणं

तीर्थ दो प्रकार के होते है :

1) स्थावर तीर्थ : वे तीर्थ हो जो स्थायी होते हैं जैसे शत्रुंजय, सम्मेदशिखर, पावापुरी, चम्पापुरी अर्थात् भगवान की कल्याणक भूमि जहाँ हमको जाकर दर्शन वंदन करने हैं।

2) जंगम तीर्थ : वे तीर्थ हैं जो चलते–फिरते हैं, वे चलते–चलते कभी भी आकर दर्शन देते हैं, वे ही साधु–साध्वी...

आचार्य मलयागिरी ने नंदी सूत्र (आगम) में उल्लेख किया है कि चलते–फिरते कोई तीर्थ है तो वे है ''साधु', साधु कोई सामान्य पद नहीं होता, ये महान साधक है जो धर्म क्रिया को जानते व समझते हैं।

गुरू (साधु) एक केन्द्र बिन्दु पर स्थित एक ओर धर्म है तो दूसरी ओर देव। वह इसी पद को धारण कर आचार्य बन सकता है ओर परमात्मा भी बन सकता है और धर्म का आचरण करते हुए धर्म का नायक भी कहा जा सकता है।

साधु के दर्शन मात्र से ही प्राणी का...

साधु दर्शन को समझने के लिए एक दृष्टान्त आता है कि नारद मुनि के मन में यह प्रश्न आया कि सभी प्राणी यह कहते हैं कि मुनि के दर्शन से मनुष्य की काया पलट दी जाती और कई महत्व की गाथा आती है तब वे भगवान कृष्ण के पास जाकर इस प्रश्न का उत्तर लेने गए और प्रश्न बताया तो उन्होंने कहा कि उत्तर देने के पूर्व उनका एक काम करना है कि वे पृथ्वी पर जाकर दक्षिणी दिशा की ओर एक बड़ा नगर है, नगर के बाहर एक गन्दा नाला है, वहां पर पुल के पास कीचड़ में एक छोटा कीड़ा है, उसको देखकर आओ वहां जाकर देखा कि वह छोटा कीड़ा कीचड़ में लथपथ होकर हिल रहा है – कीड़े ने भी

नारद जी को देखा, नारद जी को देखकर छटपटा कर मृत्यु को प्राप्त हुआ। कृष्ण के पास जाकर सब सुनाया, तब कृष्ण ने उत्तर दिशा में एक घना बगीचे में जाकर नवजात तोते के बच्चे को देखकर आने को कहा तो वहां जाकर देखा तो तोते के बच्चे ने मुनिवर को देखा तो बच्चा छटपटाता हुआ घोंसले से नीचे गिर गया ओर मर गया।

तीसरी बार पश्चिमी दिशा में गाय के बछड़े को देखने को कहा तो वहां पर ऐसी घटना हुई कि गाय का बछड़ा भी मृत्यु को प्राप्त हो गया।

मुनिवर को बहुत दुःख हुआ कि तीन–तीन घटना हो गई तब उन्होंने कृष्ण के पास नहीं जाना उचित समझा। लेकिन कृष्ण ने बुलावा भेजा और मुनिवर को जाना पड़ा तो उन्हें अंतिम बार जाने को कहा कि उत्तर दिशा में जाकर राजा के दरबार में एक राजकुमार ने जन्म लिया उसको देखकर आने को कहा। मुनिवर डरते हुए गए और बालक को झूले में सोया देखा और राजकुमार ने भी मुनिवर को देखा तब ऐसी घटना हुई। राजकुमार नीचे उतरा और ऋषिवर के पैर छुए तो मुनिवर भी आश्चर्यचकित हो गए। तब राजकुमार बोले कि वह भी कीड़ा था जिसके अन्तिम समय में मुनिवर का दर्शन करने के कारण तोतो के जीव में जीव आया, वहां भी अन्तिम समय मुनिवर के दर्शन से गाय के बछड़े के रूप में जन्म लिया ओर उस समय मुनिवर के दर्शन से राजकुमार बने है।

यह साधु दर्शन के कारण भी यह जीव निरन्तर अच्छी योनि को प्राप्त करता रहा।

छठा दिन सम्यक दर्शन (दसस्य)

शम संवेगादिकगुणा क्षयउपशम जे आवे रे।
दर्शन तेहिज आतमा शुं होय नाम धरावे रे ।।वीर।।

1) परमार्थ संस्तव श्रद्धान स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
2) परमाथ ज्ञातृसेवन स्वरूप श्री सम्यर्गदर्शनाय नमः
3) व्यापन्न दर्शनवर्जन स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
4) कुदर्शन वर्जन स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
5) शुश्रुषालिडग स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
6) धर्मराग लिड्ग स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
7) वैयावृत्य लिड्ग स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
8) अर्हद् विनय स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
9) सिद्ध विनय स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
10) चैत्य विनय स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
11) धृत विनय स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
12) प्रमादि धर्म स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
13) अनुद्धर्म विनय स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
14) आचार्य विनय स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
15) उपाध्याय विनय स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
16) प्रवचन रुप संघ विनय स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
17) दर्शन विनय स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
18) मतः शुद्धि स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
19) वचन शुद्धि स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
20) काय शुद्धि स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
21) संयम दूषणत्याग स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
22) सर्वज्ञा दूषणत्याग स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
23) विचिकित्सा दूषणत्याग स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः

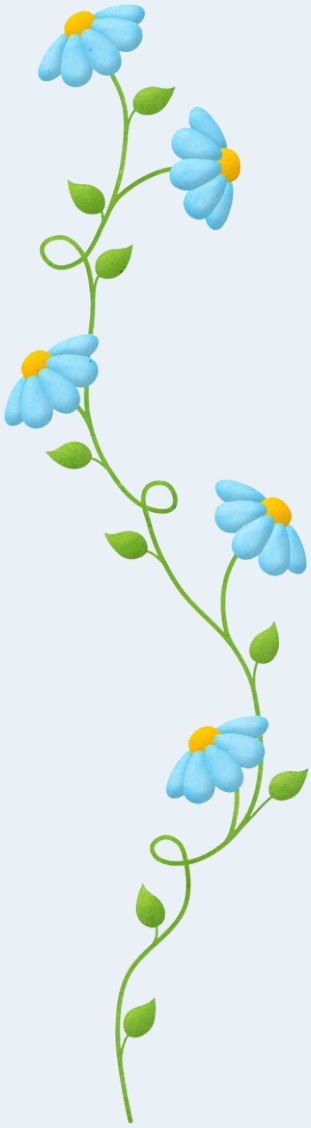

24) मिथ्यादृष्टि प्रशंसा दूषणत्याग स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
25) मिथ्यादृष्टि संसर्ग दूषणत्याग स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
26) ..... प्रभावक स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
27) ..... प्रभावक स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
28) शक्ति प्रभावक स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
29) नैमितिक प्रभावक स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
30) तपस्वि प्रभावक स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
31) विद्याभृत्वप्रभावक स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
32) सिद्ध प्रभावक स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
33) कवि प्रभावक स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
34) जिनशासन क्रियाकौशलभूषण स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
35) प्रभावना भूषण स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
36) तीर्थ सेवा स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
37) स्थैर्य भूषण स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
38) जिनशासन भक्ति स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
39) उपशम लक्षण स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
40) संवेग लक्षण स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
41) निर्वेद लक्षण स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
42) अनुकम्पा लक्षण स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
43) आस्तिक्य लक्षण स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
44) परतीर्थिक देव परतीर्थिक गृहीत जिनप्रतिमा नमन त्यागरुपयतना स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
45) परतीर्थिक देव परतीर्थिक गृहीत जिनप्रतिमा नमन त्यागरूपयतना स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
46) मिथ्यादृष्टि सहालापवर्जन यतना स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
47) मिथ्यादृष्टि सह सलापवर्जन यतना स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
48) मिथ्यादृष्टि अन्नपानदानवर्जन यतना स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
49) मिथ्यादृष्टि वारंवाराऽपानदानवर्जन स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
50) राजाभियोगाकार युक्तता स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः

51) राजाभियोगाकार युक्तता स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
52) बलाभियोगाकार युक्तता स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
53) देवाभियोगाकार युक्तता स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
54) गुरूनिग्रहाकार युक्तता स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
55) श्री वृत्तिकान्ताराकार युक्तता स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
56) श्री धर्मवृक्ष मूलमिति भावना स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
57) श्री धर्मपुरद्वारमिति भावना स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
58) श्री धर्मप्रसाद प्रतिष्ठानमिति भावना स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
59) श्री धर्माधार इति भावना स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
60) श्री धर्मभाजनसमिति भावना स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
61) श्री धर्मनिधानसमिति भावना स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
62) श्री अस्ति जीव इति श्रद्धा स्थान स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
63) श्री नित्यानित्यो जीव इति श्रद्धा स्थान स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
64) श्री कर्माण कर्ता जीव इति श्रद्धा स्थान स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
65) श्री कर्मणो भोक्ता जीव इति श्रद्धा स्थान स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
66) श्री जीवस्य मोक्षोऽस्तीति श्रद्धा स्थान स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः
67) श्री मोक्षोपायोऽस्तीति श्रद्धा स्थान स्वरूप श्री सम्यग्दर्शनाय नमः

दर्शन दसणस्य

साम्यिक् दर्शन का साधारण भाषा में यह है कि धर्म के प्रति अटूट विश्वास, आस्था, विश्वास वर्तमान में हम दृढ़ नहीं रहते है, धर्म प्रिय है–धर्म में विश्वास भी करते है लेकिन जीव निर्वाह के लिए दृढ़ नहीं रह सकते। दृढ़धर्मी यह अवश्य ध्यान रखता है कि जहां तक बन सके वह धर्म क्रिया करके ही अन्य जीवन को करना चाहिए।

स. दर्शन तीन प्रकार से प्राप्त होता है

1) साध्य – वे लोग है जिन्होंने सभी सिद्धियां प्राप्त कर ली और उच्च पद पर आरूढ़ हो गए।

ये है – 1) अरिहंत 2) सिद्ध

2) साधक वे हैं धर्म क्रिया को साधना को, भक्तिपूर्वक क्रिया विश्वास के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अग्रसर

3) साधन वे हैं जिससे हम क्रिया कहते हैं। वे धार्मिक क्रिया दृढ़ शक्ति के साथ पालन करें, क्रिया की प्रारम्भिक अवस्था सामायिक क्रिया है। कोई भी मनुष्य कितनी ही प्रकार की क्रिया का पालन करो या श्राप की आराधना तब भी उसको अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सकता जब तक उसमें दर्शन का भाव नहीं हो। अर्थात् अपनी क्रिया पर विश्वास न हो या ईश्वर की वाणी व धर्म पर विश्वास न हो जिसको दर्शन की प्राप्ति हो जाय वह ज्ञान प्राप्त कर सकता है। सम्यक दृष्टि होना आवश्यक। जैसे कामली, तापस ने 60,000 तक आयम्बिक तप की आराधना की लेकिन उसकी सम्यक दर्शन की प्राप्त नहीं होने से वह लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका।

आत्मा ही परमात्मा है। समझने के लिय व्यक्ति में सम्यक दर्शन आवश्यक है जैसा उपर वर्णन है। इसके 67 गुण है। इसकी आराधना स्तुति कर इनके गुणों को आत्मसात करें। विश्वास के साथ निम्न प्रकार से आराधना करनी चाहिए।

ऊँ ह्वी नमो दसस्य

इसकी 20 नवकार माला – खमासण, साक्षित प्रदक्षिणा करना चाहिए

इनके गुण निम्न प्रकार है :

सम्यक दर्शन का अर्थ है : सत्य को सत्य के रूप में जानना, तथ्य असत्य को असत्य के रूप में पहचानना। अन्यत्र सम्यक दर्शन का अर्थ सत्य के प्रति लगाव भी बताया है, जिससे कि आध्यात्मिक हो ।

इसका वर्णन निम्न है :

1) जैन अरिहन्तों या जैन तीर्थंकरों में दृढ़ आस्था 2) जैन धर्म के सात मूलभूत सिद्धान्तों में आस्था

3) जीव 4) अजीव उपुण्य 5) आश्रव

6) संवर 7) निर्झरा 8) बंध 9) मोक्ष

उपरोक्त आस्थाएं सम्यक दर्शन के सकारात्मक पहलू है। नकारातम्क पहलूओं में असत्य, मिथ्या, आलोचना तथा संशय से बचाव आवश्यक है। मिथ्या देवी–देवताओं, मिथ्या पुस्तकों तथा मिथ्या शिक्षकों में विश्वास न करना भी महत्वपूर्ण है।

अंक गणित में शून्य एवं अंक को भिन्न माना जाता है। किसी अंक के बिना शून्य का कोई मूल्य नहीं है। यदि कोई अंक शून्य से पहले आता है तो उस शून्य का मूल्य होता है जैसे नौ अंक के बाद तीन शून्य लगाने पर नौ हजार हो जायेंगे। जिस प्रकार किसी अंक से पूर्व शून्य का कोई मूल्य नहीं है उसी प्रकार सम्यक ज्ञान ओर चरित्र, सम्यक दर्शन के बिना निरर्थक है। सम्यक दर्शन से ही आत्मा की मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है जैसे कि हमें प्रकाश में स्पष्ट दिखाई देता है न कि अन्धकार में।

सम्यक दर्शन का अर्थ सत्य दर्शन है। इससे हमें ज्ञात होता है कि हम केवल शरीर नहीं है। परन्तु शान्त एवं सुन्दरता से परिपूर्ण आत्मा है जिनका बाह्य आवरण शरीर है। सम्यक दर्शन आत्मा का प्रमुख गुण है। यह हमें सत्य और असत्य तथा सही और गलत का भेद बताता है। इसलिये यह आत्मा के मोक्ष

मार्ग को प्रशस्त करता है। हमें आत्मा का बोध क्यों नहीं होता क्योंकि हम जन्म से मृत्यु तथा मिथ्या दर्शन में लीन रहते है। अतः हे जिनेन्द्र, हमारी आत्मा को सम्यक दर्शन का वरदान दें।

सम्यक दर्शन आत्मा द्वारा स्वतः ही प्राप्त हो सकता है, जिसे हम आन्तरिक मार्ग कहेंगे अथवा यह बाह्य सहायता जैसे आध्यात्मिक गुरूओं तथा धार्मिक महाग्रन्थो द्वारा भी प्राप्त किया जा सकता है। जैसा कि शेक्सपियर ने भी कहा है कि कुछ लोग जन्म से ही महान् होते हैं तथा कुछ अथक श्रम से माहनता प्राप्त करते हैं।

सम्यक दृष्टिवान व्यक्ति में पांच विशेष गुण प्रस्फुटित होते है :

1) प्रशम – आध्यात्मिक शान्ति

2) सम्वेग – मोक्ष की आकांक्षा

3) निर्वेद – संसार से अनासक्ति

4) अनुकम्पा – करूणा

5) आस्तिक्य – जैन दर्शन के सात मूलभूत तत्वों में श्रद्धा सम्यक दर्शन के लिये निम्न आठ बिन्दुओं का पालन जरूरी है :

1) निशंक – शंका मुक्त

2) निराकांक्षा – भौतिक इच्छाओं से रहित

3) निर्विकित्सा – धर्म के फल के प्रति संदेह न करना।

4) अमूद दृष्टि – नीर क्षीर विवेकी

5) उपवृह – गुणी जनों तथा उनके गुणों की कदर करना, अपने गुण छुपाना, ढोल नहीं पिटना

6) स्थिरीकरण – श्रद्धा से विमुख होने पर फिर से धर्म मार्ग की ओर लाना।

7) वात्सल्य – धर्म प्रेमी के प्रति सहृदयता

8) प्रभावना – अनुकरणीय आदर्शन बनना।

निम्न प्रकार के अभिमानों से बचना

1) परिवार 2) शक्ति 3) सौनदर्य 4) ज्ञान

5) समृद्धि 6) अधिकार 7) सांसरिक संबंध 8) आध्यात्मिक उन्नति

सम्यक दर्शन से हमें समभाव एवं संसार से अनासक्ति प्राप्त होती है। आत्मा को राग द्वेष, मोह आदि कर्म बन्धनों से छुटकारा मिलता है। सम्यक दर्शन में आस्था रखने वाले व्यक्ति के सभी कृत्य कर्म बन्धन के कलंक से मुक्त होते है। यह हमें क्या करना है अथवा क्या नहीं करना की सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करता है।

सातवां दिन नाणस्थ

वर्तमान में प्रत्येक मनुष्य भौतिक साधनों के पीछे दौड़ रहा है। कहां से क्या वस्तु मिले जिससे कोई सोना प्राप्त करना चाहता है तो भव्य सम्यक्त ज्ञान लेना चाहिए इन सबको प्राप्त करने के लिए मनुष्य को देखना पड़ता है, परखना पड़ता है, देखने व परखने के लिए ज्ञान बुद्धि की आवश्यकता है। बुद्धि ज्ञान को जानने के लिए आत्मा है। आत्मा का स्वभाव ज्ञानमय व दर्शन मय होता है। कोई वस्तु हम देखते हैं, कौन देखते हैं, उत्तर होगा आँखे, यदि औरों को देखती है तो मनुष्य की मृत्यु होने पर भी खुली रहती है, अर्थात् आंखे नहीं देखती देखने वाला कोई दूसरा है – दूसरा कौन ? वह है आत्मा। यहां हम कहेंगे कि आत्मा ही परमात्मा है। यदि एक प्रश्न सामने आए कि क्या आपने ईश्वर को देखा है ? कुछ हाँ, कुछ ना में उत्तर मिलेगा इसके लिए कुछ उदाहरण देकर स्प्ष्ट करेंगे।

इसके साथ–साथ यह भी स्पष्ट कर दे कि आत्मा अतिसारी होती है, स्थिर है, दिखाई न देने वाली, इकाई होती है, केवल अनुभव किया जाता है जो निम्न उदाहरण से स्पष्ट है :

मनुष्य की आंख द्वारा नहीं देखता वरन् दूसरा देखता है।

1) अन्य यह कि पानी छिद्र से आता है और छिद्र से ही जाता है, क्या पसीना चमड़ी के छिद्र से है तो फिर वापस छिद्रों से नहीं जाता है।

2) नारियल पेड़ के उपर जाता है, इसमे पानी भरा हुआ होता है, पानी कहां से आया ? यही तो ईश्वर है, यही आत्मा है जो दिखाई नहीं देती लेकिन अनुभव की जाती है।

अब आत्मा हमारे स्वभाव में स्थिर हो जाएगी उस दिन वास्तविकता हमारे स्वभाव में आ जाएगी, तब हम ज्ञानी कहलाने योग्य हो जाएगें। आज हमारे पास वह बाहरी ज्ञान है जैसे इतिहास, भूगोल, राज. विज्ञान, खगोल विज्ञान आदि, ये सभी जानकारियां है। वास्तविक ज्ञान को ढूंढने के लिए अपने आप को देखना पड़ेगा अपने आपको खोजना पड़ेगा कि मैं कौन हूँ, कहां से आया हूं और मुझे कहाँ जाना है।

मैं कौन हूँ, अपने स्वरूप को जानना पड़ेगा। हम मंदिर जाते हैं, भगवान की प्रतिमा को देखते हैं, दर्शन करते हैं, वापस लौट जाते हैं। विचार कीजिए कि भगवान भी मनुष्य थे, उनका चेहरा भी मनुष्य जैसा ही है, हम भी तीर्थंकर की संतान है तो तीर्थंकर बनने लेकिन कैसे ? धर्मक्रिया कर अष्टकर्म के पुदगल से छुटकारा प्राप्त करने पर इसके लिए पाप, पुण्य को समझना होगा। इनका नाम पूर्ण सम्यकत्व दर्शन में दिए गए हैं।

जो मनुष्य अपने आप को समझना चाहता है। खोज करना चाहता है, उसको ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना होता है। आत्मा का ज्ञान ही सच्चा व वास्तविक ज्ञान है इसको प्राप्त करने के लिए भगवान के बतलाए गये मार्ग पर चलने से भगवान के अनुभव को जो उन्होंने अपनी वाणी द्वारा प्रदर्शन किया है, उसकी अनुपालना करनी चाहिए।

आत्मा रूपी ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है तब ही हम भी आत्म ज्ञानी कहलायेंगे। एक उदाहरण है कि भगवान महावीर को उनके माता–पिता ने 8 वर्ष की आयु में पढ़ने भेजा।

तब गुरू ने उनको गणित की विद्या सिखलाते हुए 1, 2, 3, 4 बोलने को कहा तो महावीर के हर बार एक ही उत्तर दिया तब गुरू ने कहा कि राजकुमार तुम एक पर अटक रहे है, आगे नही पढ़ना है तब भगवान महावीर ने कहा कि जो एक जाने, सब जाने। ऐसे समय में इन्द्रदेव ने आकर गुरूजी को कहा गुरूजी आप किसे पढ़ा रहे है। ये तीन ज्ञान के धारक है उनको पढ़ाने का समता है। जिसने आत्मा को समझा उसने अपने आप को समझा। आत्मा ज्ञान मय दर्शन पर स्थित होती है, अविनाशी होती है। अस्पर्शी होती है अनुभव व अनुभूति से ज्ञात होती है।

जानना, देखना का कार्य आत्मा का कार्य

आत्मा का देखना जानना

जिस दिन स्वभाव

जो अनुष्ठान व धर्म–क्रिया को जानता है वह ज्ञान है।

ज्ञान ही सूर्य है, ज्ञान ही प्रकाशमान है।

ज्ञानी कहते है कि पहले तन को प्राप्त करना चाहिए बाद में क्रिया को

ज्ञान को समझे बिना क्रिया सफल नहीं होती, ज्ञानी को कभी कर्म बन्धन नहीं होता क्यों कि उसकी दृष्टि आत्मा पर रहती है। उसकी दृष्टि आत्मा है वहीं जिसे व्यक्ति भी उसे दृष्टि चाहती कर्मों के है, चाहे वह धार्मिक कार्य में हे, तो भी उसे कर्म बन्ध होगा, शरीर का चलाने वाला कौन है, यह जानने की कोशिश नहीं करता। देखने वाला कौन है, जो देखता है वह आत्मा है, जो अनुभव है वहाँ ज्ञान है।

आत्मा कर्मों की बन्धन है।

जान पढ़ने व समझने का प्रयास करते रहना चाहिए – बाधना

ज्ञान सीखने का प्रयास करना चाहिए, वर्तमान में यह अवश्य है कि मनुष्य में वास्तविक ज्ञान सीखे, पढ़ना व जानना से कोई रूचि हीं नहीं है। स्वाध्याय के लिए कोई उम्र नहीं होती। राजा कुमारपाल जो उत्कंठा थी, उन्होंने श्री हेमचन्द्राचार्य के यहां अपनी इच्छा प्रकट को किया तो उस समय प्रचलित भाषा संस्कृत को 50 वर्ष की आयु में सीखने का प्रयास किया और 7 वर्ष की आयु में हेमचन्द्राचार्य द्वारा दी गई यही साधन पर 70 वर्ष की आयु में शास्त्र को लिखा। इसी प्रकार श्री सिद्धसेन सूरि के गुरू श्री वृहदवादी के ढलती उम्र मे दीक्षा अंगीकार की। एक दिन उन्होंने अपने गुरू को कहा कि वह शास्त्र पढ़ना व याद करना चाहता है तो गुरू ने शास्त्र का एक पाठ दे दिया। उस पाठ को लेकर उपन्यास में जोर–जोर से बोलकर याद करने लगे।

अन्य मुनियों को पढ़ने में बाधा आने लगी तो उन्होंने गुरू से शिकायत की तब गुरू ने उन्हें कहा कि

इतनी बढ़ी उम्र में दिक्षा लेने से याद नहीं होता है तो नवकार मंत्र का ही जाप करें। तब वादी मुनि ने सीखने के प्रति उत्कंठा होने के कारण इन्होंने कहा कि याद हो या न हो वह प्रयास करेगा ही और उपाश्रय के बाहर बैठकर याद करने लगे। तब भी अन्य मुनि, आते–जाते श्रावक उनका उपहास करने लगे। लेकिन वे मुनि विचलित नहीं हुए और अपना प्रयास चालू रखा। उनके पढ़ने व सीखने की उत्कंठा (इच्छा) से प्रसन्न होकर माँ सरस्वती प्रगट हुई और मुनिवर को कहा कि हे मुनिवर, आपकी ज्ञान सीखने की उत्कंठा को देखकर प्रसन्न हुई, बोलो क्या चाहिए ? तो उन्होंने कहा कि उन्हें आगम विद्या चाहिए तब माँ सरस्वती ने सभी विद्या सिद्ध होने का आशीर्वाद दिया। आगे चलकर यही मुनि आगम के महान ज्ञाता थे। वाद–विवाद में सफल होते थे। इसलिए इनको वृहदवादी नाम से जाना जाात हे। वृहद का तात्पर्य बुजई

ज्ञान को स्मरण करने के लिए पांच बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए (1) वाचना (2) पृच्छना (3) प्रतिसपण (4) (5) स्मृति

गुरू द्वारा जो सीखाया जाये, बोला जावे उसको सुनकर ध्यान में रखना यदि (2) कोई बात समझ में न आई हो, तो पूछना व स्पष्ट हो जाना (3) प्राप्त ज्ञान को उपर नीचे कर याद करना चाहिए। ज्ञान को सुरक्षित कर स्मरण करते रहना। यह पढ़ना व सीखना व स्मृति में रखने के लिए ज्ञानियों ने कहा है कि जिस प्रकार पान को पानी में उल्ट–फेर कर रहने से खराब नहीं होता और घोड़े को बिना दौड़ाए बांध रखने से अड़ जाएगा और विद्या उलट–पुलट न करने से विस्मृत नहीं होगी।

ज्ञान की दृष्टि से सर्वाधिक ज्ञानी

आर्य भद्रबाहु स्वामी थे जिनके पास 14 पूर्वो का ज्ञान था व अंतिम श्रुत केवली थे।

भगवान श्री महावीर के निर्वाण के बाद देश में 12 वर्ष तक निरनतर दुष्काल होने से ज्ञान प्राप्त विस्मृत हो रहा था विचारमय की। आर्य भद्रबाहु स्वामी तो उस समय नेपाल में अपनी साधना में थे। उनके पास साधु भगवंतों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेजा गया। स्थूलीभद्र जी की अध्यक्षता में 500 साधु उनके पास गए, वहां पर जाकर श्री स्वामी जी का आने का कारण बताया तो पहले तो वे तैयार नही हुए। क्योंकि वे उस समय महाप्राण ध्यान साधना में लीन थे, अनुनय निवेदन करने पर वे प्रतिदिन अपनी साधना समय के बाद 7 वाचना देते थे। इस प्रकार श्री स्थूलीभद्र जी ने 10 पूर्वी ज्ञान के बाद व अर्थ की शिक्षा प्राप्त कर चुके। लेकिन उनको थोड़ा गर्व हो गया था ओरप्रयोग करने लगे, तब उन्होंने आगे ज्ञान देना स्थगित कर दिया। अनुनयपूर्वक निवेदन करने पर श्री स्वामी जी ने शेष 4 पूर्वी का ज्ञान का मूल सिखाया – अर्थ नहीं। ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को विनयशील होना चाहिए अतः विनय का गुण होना चाहिए। विनय व्यक्ति ही ज्ञानी हो सकता है।

ज्ञान पांच प्रकार का होता है।

1) मति ज्ञान 2) श्रुतिज्ञान 3) अवधि ज्ञान 4) मन पर्यावः ज्ञान 5) केवल ज्ञान

इनमें से प्रत्येक के अलग अलग होते है :

1) मति ज्ञान 2) सुविज्ञान 3) अवधि ज्ञान 4) मन पर्याव ज्ञान 5) केवल ज्ञान

इस सब मिलाकर 551 प्रकार के ज्ञान है, इसकी निम्न प्रकार से आराधना करनी चाहिए।

ऊँ ह्री नमो नाणस्य

इसकी 20 माला गिननी चाहिए, 51 स्वास्तिक, 51 प्रशवेक्षण, 51 साथिया

श्वेत वस्त्र पहनकर आराधना करनी चाहिए। आराधना करने के पूर्व इन गुणों को आत्मसात करना चाहिए और यह भी संकल्प करना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति को एक दो पृष्ठ प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिए। मूल सारांश का भी होने से सार भी पढ़ना चाहिए। दर्शन, पूजा करने के बाद पढ़ने के नियम लेना चाहिए। प्रत्येक मंदिर में कुछ सारांश रखे होने चाहिए।

इस सम्बन्ध में दिगम्बर समाज में श्रावक–श्राविका पूजा, दर्शन करने के बाद वहां रखे हुए शास्त्रों का अध्ययन कर शास्त्र रख कर जाते। श्वेताम्बर समाज में ज्ञान का अध्ययन करने की रूचि नहीं है, बढ़ाने की आवश्यकता है।

इसके गुण होते हैं जो निम्न प्रकार है :

आचार्य को नमन है। आचार के उत्कृष्ठ पालक और अपने अनुयायियों को आचार्य की मर्यादाओं को पालन करने हेतु तीर्थंकरों के अभाव में आचार्य नेतृत्व देते हैं। उपदेश के माध्यम से वे जगत के जीवों का परम् उपकार करते हैं। अतः इसको तृतीय पद आचार्य को नमन करने सम्यकत्व का के प्रादुर्भाव का कारण बनता है।

सातवां दिन सम्यक ज्ञान के 51 गुण है।

ज्ञान पद

ज्ञानवरणीय जे कर्म छे क्षय उपशम तस थाय रे।
तो हुए एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाय रे।।वीर।।

1) स्पर्शनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह स्वरुप श्री मतिज्ञानाय मनः
2) रसनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह स्वरुप श्री मतिज्ञानाय मनः
3) घ्राणेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह स्वरुप श्री मतिज्ञानाय मनः
4) श्रोत्रेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह स्वरुप श्री मतिज्ञानाय मनः
5) स्पर्शनेन्द्रियार्थावग्रह स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
6) रसनेन्द्रियार्थावग्रह स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः

7) घ्राणेन्द्रियार्थावग्रह स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
8) चक्षुरिन्द्रियार्थावग्रह स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
9) श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रह स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
10) मनोऽर्थावग्रह स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
11) स्पर्शनेन्द्रियेहा स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
12) रसनेनिद्रयेहा स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
13) घ्राणेन्द्रियेहा स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
14) चक्षुरिन्द्रियेहा स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
15) श्रोत्रेन्द्रियेहा स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
16) मनईहा स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
17) स्पर्शनेन्द्रियापाय स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
18) रसनेनिद्रयापाय स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
19) घ्राणेन्द्रियापाय स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
20) चक्षुरिन्द्रियापाय स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
21) श्रोत्रेन्द्रियापाय स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
22) मोनोऽपाय स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
23) स्पर्शनेन्द्रिय धारणा स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
24) रसनेन्द्रिय धारणा स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
25) घ्राणेन्द्रिय धारणा स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
26) चक्षुरिन्द्रिय धारणा स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
27) श्रोत्रेन्द्रिय धारणा स्वरूप श्री मतिज्ञानाय नमः
28) मनोधारणा स्वरूप श्री श्रतज्ञानाय नमः
29) अक्षर स्वरूप श्री श्रुतज्ञानाय नमः
30) अनक्षर स्वरूप श्री श्रुतज्ञानाय नमः
31) संज्ञि श्रुतज्ञानाय नमः
32) असंज्ञि श्रुतज्ञानाय नमः

33) सम्यक् श्रुतज्ञानाय नमः
34) मिथ्या श्रुतज्ञानाय नमः
35) सादि श्रुतज्ञानाय नमः
36) अनादि श्रुतज्ञानाय नमः
37) तपर्यवसित श्रुतज्ञानाय नमः
38) अपर्थवसित श्रुतज्ञानाय नमः
39) ममिक श्रुतज्ञानाय नमः
40) आगमिक श्रुतज्ञानाय नमः
41) अंगप्रविष्ट श्रुतज्ञानाय नमः
42) अनंगप्रविष्ट श्रुतज्ञानाय नमः
43) अनुगामिकाऽवधिज्ञानाय नमः
44) अननुगामिकावधिज्ञानाय नमः
45) वर्धमानवधिज्ञानाय नमः
46) हीयमानावधिज्ञानाय नमः
47) प्रतिपात्यवधिज्ञानाय नमः
48) अप्रतिपात्यवधिज्ञानाय नमः
49) ;जुमति मनः पर्यवज्ञानाय नमः
50) विपुलमति मनः पर्यवज्ञानाय नमः
51) लोकालोक प्रकाशक श्री केवलज्ञानाय नमः

सम्यक ज्ञान के पूर्ण सम्यक दर्शन अथवा स्वयं दृष्टिकोण होना आवश्यक है अर्थात् हमारा दृष्टिकोण सही है तो सही ज्ञान प्राप्त होता है। अन्यथा इसके विपरीत होगा। मिथ्या दृष्टि धारी व्यक्ति कभी भी सम्यक ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। लेकिन पूर्व भव में कर्म के आवरण प्रस्तुति नहीं होगा। कर्मों के रूप से ज्ञान का अभिभाव होता है।

आत्मा पर कर्मों की धूल जया नहीं हो जाती है तो धुंधला हो जाता है।

आठवां दिन

जैन धर्म में मनुष्य का ध्येय मोक्ष प्राप्ति बाताया गया है। इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए मनुष्य को चारित्र धर्म को स्वीकार करना है। चारित्र का कार्य जल के समान है। जल से प्रत्येक वस्तु की शुद्धि की जाती है, उसी प्रकार चारित्र को स्वीकार करने पर ही एक प्रथम सीढ़ी है।

सभी प्रकार की धर्म क्रिया करके पुण्य तो कमा सकती है पवित्र चारित्र के मोक्ष प्राप्त नहीं किया जा सकता।

चारित्र की परिभाषा है उसके कर्म पद्धति है। चथ रिक्त संजय रिक्त (यशोभद्रविजय) अनादिकाल में भी अष्टकर्मों को संचय किया वह रिक्त करना है किन–किन कारणों से आत्मा से

1) आश्रव के पांच द्वार

मिथ्यावद ....., गर्व आदि

2) ऐसा माना जाता है कि आत्मा पर जो पाप बंध बने हुए हैं, उसको हटाने के लिए महावीर भगवान ने एक उदाहरण देकर स्पष्ट समझाया कि एक सरोवर जो पानी भरा हुआ (अर्थात् जो पूर्व जन्म में जो पाप हुए है उसको रिक्त करना है, मनुष्य उसको खाली करना है, अर्थात पापों को अपनी धर्म क्रिया (सामायिक तंत्र) से खाली करता है, लेकिन सामायिक तो केवल 48 मिनट तक की ही होती है, उसको बाद रोज समय में पुनः पाप क्रिया में लग जाते हैं तो सरोवर पुनः (पानी रूपी पाप) से भर जाता है तो इसका मार्ग–सवर अर्थातः जिन मार्गों से या जिन क्रियाओं से एकत्रित होते हैं, उनको बड़ा करना है व मार्ग चारित्र धर्म स्वीकार तो करने के पश्चात् भी चारित्रधर्मी को भी कई संकटों का सामना करना पड़ता है, वह इसलिए है कि वे उनके पूर्व भव के पापों का उदय से है।

सवर होने से नए कर्म (पाप) नहीं जुड़ेगे। धीरे–धीरे सभी पाप कर्म समाप्त हो जायेंगे तो मोक्ष निश्चित है। चारित्र धर्म इतना सरल नहीं है, उसको कई कष्टों का सहन करना पढ़ता है। सबसे पहले वह विनयशील, संयमी, सामनाशील होगा।

यह भी सत्य है कि हर मनुष्य चारित्र धर्म अंगीकार नहीं कर सकता लेकिन ऐसा भी कहा जाता है कि सर्व विरती नहीं हो सकते तब हर मनुष्य जो श्रावक के 12 व्रतों में से एक भी व्रत का व 14 नियमों में अनुकूलता के आधार पर एक नियम तो अवश्य लेना चाहिए, हम नवम पद की आराधना करने आयम्बिलता भी करते हैं तो यह तो अवश्य कर सकते हैं कि एक समय प्रथम रोटी बिना घी के खानी चाहिए। यह व्रत तो अवश्य लेना चाहिए।

चारित्र धर्म इतना बड़ा होता है कि देवता भी उसको सर्वप्रथम नमन करते हैं यहां तक विरतीधारी को नमन कर अपने सिंहासन पर आसन ग्रहण करते हैं।

चारित्र धर्म के 70 गुण होते, कोई 17 मानते हैं, अतः अपनी अनुकूलतना के आधार पर निम्न मंत्र की आराधना करनी चाहिए।

ऊँ ह्वी नमोः चारित्रस्य

इसमें 20 माला, 70 या 17 साथिया, 70 या 17 काउसग्गीय व प्रदक्षिणा देकर आराधना करनी चाहिए। इसके पूर्व स्तुति बोलकर इनके 70 गुणों का मनन और चिंतन करने का प्रयास करना चाहिए।

सम्यक चरित्र के निम्न 70 गुण है :

चाल चारित्र ते आतमा निजस्वभाव मां रमतो रे।

..... अंलकर्यों मोहवने नवि भमतो रे ।।वीर।।

1) सर्वतःप्राणातिपात विरमणव्रत स्वरूप श्री चारित्राय नमः
2) सर्वतः मूषावाद विरमणव्रत स्वरूप श्री चारित्राय नमः
3) सर्वतोऽदत्तादान विरमणव्रत स्वरूप श्री चारित्राय नमः
4) सर्वतोऽमैथुन विरमणव्रत स्वरूप श्री चारित्राय नमः
5) सर्वतः परिग्रह विरमणव्रत स्वरूप श्री चारित्राय नमः
6) सम्यक् क्षमा धर्म स्वरूप श्री चारित्राय नमः
7) सम्यर्क मार्दवधर्म स्वरूप श्री चारित्राय नमः
8) सम्यक् आर्जवधर्म स्वरूप श्री चारित्राय नमः
9) सम्यक् मुक्तिधर्म स्वरूप श्री चारित्राय नमः
10) सम्यक् तपोधर्म स्वरूप श्री चारित्राय नमः
11) सम्यक् संयमधर्म स्वरूप श्री चारित्राय नमः
12) सम्यक् सत्यधर्म स्वरूप श्री चारित्राय नमः
13) सम्यक् शौचधर्म स्वरूप श्री चारित्राय नमः
14) सम्यक् अंकितचन्यधर्म स्वरूप श्री चारित्राय नमः
15) सम्यक् ब्रह्मचर्य धर्म स्वरूप श्री चारित्राय नमः
16) पृथ्वीकाय जीवरक्षा संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
17) अपकाय जीवरक्षा संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
18) तेजस्काय जीवरक्षा संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
19) वायुकाय जीवरक्षा संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः

20) वनस्पति जीवरक्षा संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
21) द्वीन्द्रिय जीवरक्षा संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
22) त्रीन्द्रिय जीवरक्षा संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
23) चतुरिन्द्रिय जीवरक्षा संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
24) पंचेन्द्रिय जीवरक्षा संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
25) अजीव संयम संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
26) प्रेक्षा संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
27) उपेक्षा संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
28) प्रमार्जन संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
29) परिष्ठापन संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
30) मनः संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
31) वचन संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
32) काय संयम स्वरूप श्री चारित्राय नमः
33) आचार्य वैयावृत्य स्वरूप श्री चारित्राय नमः
34) उपाध्याय वैयावृत्य स्वरूप श्री चारित्राय नमः
35) तपस्वि वैयावृत्य स्वरूप श्री चारित्राय नमः
36) लघुशिष्य वैयावृत्य स्वरूप श्री चारित्राय नमः
37) ग्लानसाधु वैयावृत्य स्वरूप श्री चारित्राय नमः
38) स्थविर वैयावृत्य स्वरूप श्री चारित्राय नमः
39) समनोज्ञ सामाचारीकारक वैयावृत्य स्वरूप श्री चारित्राय नमः
40) श्रमणध वैयावृत्यसं स्वरूप श्री चारित्राय नमः
41) चन्द्रादिकूल वैयावृत्य स्वरूप श्री चारित्राय नमः
42) कौटिकादि गण वैयावृत्य स्वरूप श्री चारित्राय नमः
43) स्त्री पशुपंडकरहितवसतिवास शुद्ध ब्रह्म गुप्ति स्वरूप श्री चारित्राय नमः
44) स्त्री सहसराग वार्तापाल वर्जन शुद्ध ब्रह्मगुप्ति स्वरूप श्री चरित्राय नमः
45) स्त्री आसन वर्जन शुद्ध ब्रह्मगुप्ति स्वरूप स्वरूप श्री चरित्राय नमः
46) स्त्री सारागांगोपांग निरीक्षण वर्जन शुद्ध ब्रह्मगुप्ति स्वरूप श्री चरित्राय नमः

47) कुडयान्तरित स्त्री पुरूष कीड़ास्थान वर्जनशुद्ध स्वरूप श्री चारित्राय नमः
48) पूर्व भुक्त स्त्रीसंग क्रीडा विलास स्मरण वर्जन शुद्ध स्वरूप श्री चारित्राय नमः
49) सरसाहार वर्जन शुद्ध ब्रह्मगुप्ति स्वरूप श्री चारित्राय नमः
50) अति मात्राहार वर्जन शुद्ध ब्रह्मगुप्ति स्वरूप श्री चारित्राय नमः
51) विभूषादि शरीरशोभा वर्जन शुद्ध गुप्ति स्वरूप श्री चारित्राय नमः
52) श्री सम्यग् ज्ञान स्वरूप श्री चारित्राय नमः
53) श्री सम्यग् दर्शन स्वरूप श्री चारित्राय नमः
54) श्री चारित्र स्वरूप श्री चारित्राय नमः
55) अनशन तप स्वरूप श्री चारित्राय नमः
56) औनोदाये तप स्वरूप श्री चारित्राय नमः
57) वृत्ति संक्षेप तप स्वरूप श्री चारित्राय नमः
58) रस त्याग तप स्वरूप श्री चारित्राय नमः
59) लोचादि कायक्लेश सहन तप स्वरूप श्री चारित्राय नमः
60) संलीनता तप स्वरूप श्री चारित्राय नमः
61) प्रायश्चित ग्रहण रूपाभ्यन्तर तप स्वरूप श्री चारित्राय नमः
62) विनय करणाभ्यन्तर तप स्वरूप श्री चारित्राय नमः
63) वैयावृत्यकरण रूपाभ्यन्तर तप स्वरूप श्री चारित्राय नमः
64) स्वाध्याय करण रूपाभ्यन्तर तप स्वरूप श्री चारित्राय नमः
65) शुभध्यान करण रूपाभ्यन्तर तप स्वरूप श्री चारित्राय नमः
66) उत्सर्ग करणाभ्यन्तर तप स्वरूप श्री चारित्राय नमः
67) क्रोध निग्रह श्री चारित्राय नमः
68) मान निग्रह श्री चारित्राय नमः
69) माया निग्रह श्री चारित्राय नमः
70) लोभ निग्रह श्री चारित्राय नमः

नवां दिन तप आराधना

नव पद ओली का आज 9 वां दिन है अर्थात् अन्तिम दिन है। तप के दो उद्देश्य है (1) आत्मा की शुद्धि का होता है। (2) सिद्धि प्राप्त कर नव तत्व को जानता है, दर्शन से उस पर दृढ़ विश्वास करना, ज्ञान प्रकाश देता है तथा चारित्र से, कैसे कर्मों का निरोध होता है और तप से आत्मा की शुद्धि का कार्य करता है। भाव तप करने वाला आत्मा पर लगे अष्टकर्म का मेल दूर कर निर्मल करती है, इस प्रकार काया का कार्य शुभ शुद्धि वृद्धि स्वयं हो जाती है।

आत्म स्वरूप का प्राप्त करना चाहिए इसके तप का मार्ग अपनाना चाहिए। महावीर भगवान के 25 वें भव में राजकुमार नंद वंदन बनता है। तप से आत्मा से आत्मा पर लगे कर्म दूर हो जाते हैं जैसे श्री पूण्डरीक स्वामी 5 करोड़ मुनियों के साथ स्वर्ग सिधारणा। आप अनन्त गुण प्रधान करते हैं।

इनमें 50 गुण होते हैं, इस गुणों को मन में आत्मसात करते हुए निम्न प्रकार से आराधना करनी चाहिए।

ऊँ ह्व नमोः तपस्य, प्रदक्षिज्ञणा, 50 साथिया, 20 माला, 50 काउसग्गीय

नवां दिन–तप पद

इच्छारोधे संवरो परिणति समता योगे रे।

तप ते एहिज आतमा वरते निज गुण भोगे रे ।।वीर।।

1) श्री यावत् कथिकानशन स्वरुप तपसे नमः
2) श्री इत्वरिकानशन स्वरुप तपसे नमः
3) श्री बाहयौनौदर्य स्वरुप तपसे नमः
4) श्री आभ्यंतरौनौदयं स्वरुप तपसे नमः
5) श्री द्रव्यतो वृत्तिसंक्षेप स्वरुप तपसे नमः
6) श्री क्षेत्रतो वृत्तिसंक्षेप स्वरुप तपसे नमः
7) श्री कालतो वृत्तिसंक्षेप स्वरुप तपसे नमः
8) श्री भावतो वृत्तिसंक्षेप स्वरुप तपसे नमः
9) श्री लोचादि कायाक्लेश स्वरुप तपसे नमः
10) श्री रसत्याग स्वरुप तपसे नमः
11) श्री इन्द्रियक्वाय योग संलीनता स्वरुप तपसे नमः
12) श्री स्त्रीपशु पंडकादि वर्जितवसत्यवस्थान स्वरुप तपसे नमः
13) आलोचना प्रायश्चित स्वरुप तपसे नमः

14) प्रतिकण प्रायश्चित स्वरुप श्री तपसे नमः
15) मिध प्रायश्चित स्वरुप श्री तपसे नमः
16) विवेक प्रायश्चित स्वरुप श्री तपसे नमः
17) उत्सर्ग प्रायश्चित स्वरुप श्री तपसे नमः
18) तपः प्रायश्चित स्वरुप श्री तपसे नमः
19) छेद प्रायश्चित स्वरुप श्री तपसे नमः
20) मूल प्रायश्चित स्वरुप श्री तपसे नमः
21) अनवास्थाप्य प्रायश्चित स्वरुप श्री तपसे नमः
22) पारांचित प्रायश्चित स्वरुप श्री तपसे नमः
23) ज्ञानविनय प्रायश्चित स्वरुप श्री तपसे नमः
24) दर्शन विनय प्रायश्चित स्वरुप श्री तपसे नमः
25) चारित्र विनय प्रायश्चित स्वरुप श्री तपसे नमः
26) शुभ मनः प्रवृत्ति विनय स्वरुप श्री तपसे नमः
27) शुभ वचन प्रवृत्ति विनय स्वरुप श्री तपसे नमः
28) शुभ काय प्रवृत्ति विनय स्वरुप श्री तपसे नमः
29) औचारिक विनय स्वरुप श्री तपसे नमः
30) आचार्य वैयावृत्य स्वरुप श्री तपसे नमः
31) उपाध्याय वैयावृत्य स्वरुप श्री तपसे नमः
32) स्थविर वैयावृत्य स्वरुप श्री तपसे नमः
33) तपस्विसाधु वैयावृत्य स्वरुप श्री तपसे नमः
34) लघुशिष्यादि वैयावृत्य स्वरुप श्री तपसे नमः
35) ग्लान साधु वैयावृत्य स्वरुप श्री तपसे नमः
36) समनोज्ञ सामाचारी कारक वैयावृत्य स्वरुप श्री तपसे नमः
37) श्रमणसंघ वैयावृत्य स्वरुप श्री तपसे नमः
38) चन्द्रादिकुल वैयावृत्य स्वरुप श्री तपसे नमः
39) कौटिकादिगण वैयावृत्य स्वरुप श्री तपसे नमः
40) वाचना स्वाध्याय स्वरुप श्री तपसे नमः

41) पृच्छना स्वाध्याय स्वरुप श्री तपसे नमः
42) परावर्त्तना स्वाध्याय स्वरुप श्री तपसे नमः
43) अनुप्रेक्षा स्वाध्याय स्वरुप श्री तपसे नमः
44) धर्मकथा स्वाध्याय स्वरुप श्री तपसे नमः
45) आर्त्तध्यान निवृत्तिध्यान स्वरुप श्री तपसे नमः
46) रौद्रध्यान निवृत्तिध्यान स्वरुप श्री तपसे नमः
47) धर्मध्यान निवृत्तिध्यान स्वरुप श्री तपसे नमः
48) शुक्लध्यान प्रवृत्तिध्यान स्वरुप श्री तपसे नमः
49) बाध्योत्सर्ग स्वरुप श्री तपसे नमः
50) आभ्यंतरोत्सर्ग स्वरुप श्री तपसे नमः

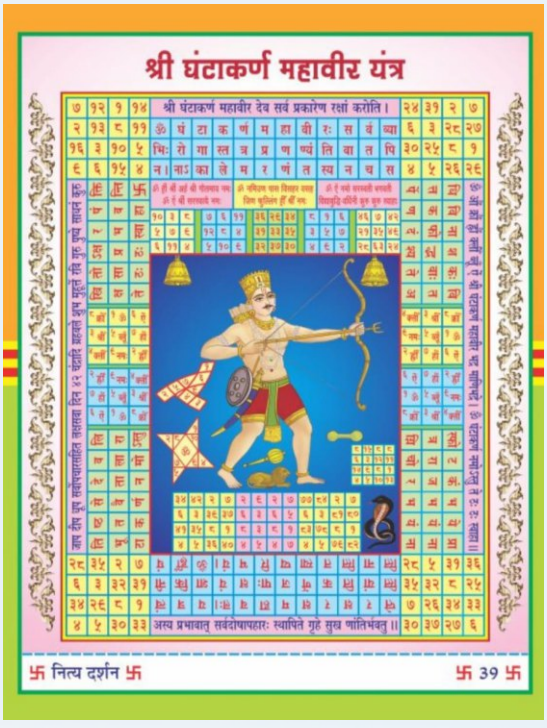

विदेशों में जैन धर्म

जैन धर्म में वीरचन्द गांधी को जैन धर्म पर बोलने वाला पहला व्यक्ति माना जाता है। अमेरिका में पहले 1914 में पहला जैन मंदिर था जिसे बाद में दो बार अन्य शहरों में स्थानान्तरित किया। जैन धर्म के अपने अंहिसा के आधार पर यांत्रिक साधना का आयात नहीं करते है यद्यपि सन् 1975 में जैन संत श्री सुशील कुमार (स्थानकवासी) ने संयुक्त राज्य अमेरिका में अन्तर्राष्ट्रीय में जैन संस्था प्रारम्भ की है इसके अतिरिक्त कनाडा व अन्य देशों में भी जैन संस्थान एक Mission के रूप में प्रारम्भ की।

वर्तमान में संयुक्त राज्य अमेरिका में लाखों जैन निवास करते है और कई जैन संस्थाए सक्रिय है और कई मंदिर स्थापित है। जिसकी विधिवत् प्रतिष्ठा भी श्री अन्तर्राष्ट्रीय विधिकारक श्रीहरण द्वारा सम्पन्न हुई जहां जैन धर्म से सम्बन्धित सभी अनुष्ठान, धार्मिक क्रिया समारोह का आयोजन होता है।

पूर्व में एक भिक्षु ने अनुसंधान कर स्पष्ट किया कि बर्मा में पूर्व में कई जैन धर्मी रहते थे वर्तमान में नहीं है, रंगून में 3–4 जैन मंदिर (प्राचीन) है जिसको सरकार अपने संरक्षण में लेने जा रही है। चीन में भी जैन धर्म का प्रभाव था। प्राचीनकाल में 23000 जैन मंदिर थे, कहा जाता है कि चीन में ऋषभदेव भगवान के पुत्र का शासन था। चीन में आज भी जैन साहित्य व कला का प्रभाव देखा जा सकता है। व्यान शहर में खुदाई में कई सुरंगे प्राप्त हुई है। जिसमें 400 जैन प्रतिमाएं जो काष्ट की प्राप्त हुई। इसके साथ–साथ मंगोलिया में भी जैन धर्म प्रचलित था। दक्षिणी मंगोलिया में भी कई तोरण खण्डहर देखने को मिलते हैं।

बांगलादेश

पाकिस्तान

दुबई में जैन मंदिर

बेल्जियम में जैन मंदिर

श्रीलंका में जैन मंदिर

1947 में पाकिस्तान बनने पर जैनी भाई जब पाकिस्तान छोड़कर भारत आ रहे थे, उस समय वहां मौलाना अशरफ अली को जैन धर्मी मंदिर की चाबी देकर भारत आ गए थे। यह मौलाना आज भी मंदिर की चाबी किसी जैन धर्म को सुपुर्द करना चाहते हैं।

बाबरी मस्जिद तोड़ते समय वहां पर इस जैन मंदिर को मुस्लिम तोड़ने आए, लेकिन मौलाना ने उनको प्रवेश नहीं करने दिया। वे कहते है कि कोई भी धर्म अन्य धर्म पर घृणा करना नहीं सिखाते है। ये मंदिर मंदिर, मस्जिद एक ही परिसर में है। प्राचीन मुस्लिम व वर्तमान के मुस्लिम मौलाना के विचारों में कितना अंतर है।

शिकागो

सिंगापुर

केलिफोर्निया

नागालैण्ड

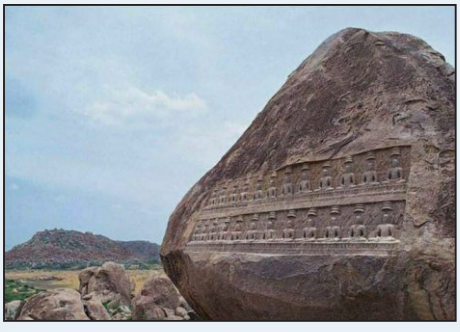

अफगानिस्तान

हांगकॉग